बाबा मोहन राम की आरती PDF

जग मग जग मग जोत जली है,
मोहन आरती होने लगी है

पर्वत खोली का सिंहासन, जिसपर मोहन लगाते आसन
आ मंदिर मैं देते भासन उस मोहन की जोत जगी है।
जगमग जगमग...

कलयुग मैं अवतार लियो है पर्वत ऊपर वास कियो है
गाँव मिलकपुर मंदिर तेरा जहाँ दुखियो का लग रहा डेरा
ज्ञान का वहां भंडार भरा है सीताफल का वृक्ष खड़ा है।
जगमग जगमग...

यहाँ पैर दिल तुम रखो सच्चा सभी है इसमें बूढा बच्चा
प्रेम से मिलकर शक्कर बाटों बाबा जी का जोहड़ छाँटो
उस मोहन की जोत जगी है।
जगमग जगमग...

अंधे को तुम नेत्र देते कोढ़ी को देते हो काया
बाँझन को तुम पुत्र देते निर्धन को देते हो माया।
जगमग जगमग...

pdfinbox.com

शिला जी को तुम दर्शाए गाँव मिलकपुर मंदिर बनवाए
शिव जी का वास कराये अपनी माया को दर्शाए।
जगमग जगमग…

शिला जी की वही है विनती प्रेम से मिलकर बोलो आरती
उस मोहन की जोत जगी है, मोहन आरती होने लगी है।
जगमग जगमग…

बोलो बाबा मोहन राम की जय

pdfinbox.com

pdfinbox.com